अंक : १३७

जनवरी - मार्च २०१७

कथाबिंब

कथाप्रधान त्रैमासिक पत्रिका

कहानियां

नीरजा हेमेंद्र ● डॉ. रमाकांत शर्मा ● माधव नागदा
अरुणा जेठवाणी ● डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

आमने-सामने

माधव नागदा

२० रुपये

Marching Towards..
Digital India..!

Yes! ..आता मी

कोणत्याही बँकेतील खात्यामध्ये

पैसे पाठवू किंवा मिळवू शकतो!

बँक ऑफ महाराष्ट्र सादर करीत आहे

UPI

महा–यूपीआय ॲप

फक्त 4 सोप्या स्टेप्स्

- गुगल प्ले वरून डाऊनलोड करा महा–यूपीआय ॲप
- स्वत:चा पेमेंट आयडी तयार करा
- त्याला तुमचे खाते जोडा
- कोणत्याही बँकेतील खात्यामध्ये पैसे पाठवा अथवा मिळवा

बैंक ऑफ महाराष्ट्र
Bank of Maharashtra
भारत सरकार का उद्यम

एक परिवार एक बैंक

टोल फ्री क्रमांक.: 1800-233-4526
वेबसाइट: www.bankofmaharashtra.in
नेट बैंकिंग: https://www.mahaconnect.in

फोन किंवा ई–मेलच्या माध्यमाद्वारे आपल्या इंटरनेट बँकिंगची माहिती,
जसे की युजर आयडी/पासवर्ड किंवा आपल्या क्रेडिट/डेबिट कार्डचा नंबर/सीव्हीव्ही/ओटीपी कोणालाही सांगू नये.

जनवरी-मार्च २०१७
(१९७९ से प्रकाशित)

कथाबिंब

प्रधान संपादक
डॉ. माधव सक्सेना "अरविंद"

संपादिका
मंजुश्री

संपादन सहयोग
डॉ. राजम पिल्लै
जय प्रकाश त्रिपाठी
अशोक वशिष्ठ
अश्विनी कुमार मिश्र

संपादन-संचालन पूर्णतः
अवैतनिक तथा अव्यवसायिक

● सदस्यता शुल्क ●
आजीवन : ७५० रु., **त्रैवार्षिक** : २०० रु.,
वार्षिक : ७५ रु.,
कृपया सदस्यता शुल्क
मनीऑर्डर, चैक द्वारा
केवल **"कथाबिंब"** के नाम ही भेजें.

● रचनाएं व शुल्क भेजने का पता ●
ए-१० बसेरा, ऑफ दिन-क्वारी रोड,
देवनार, मुंबई-४०० ०८८.
फोन : २५५१ ५५४१, ९८१९१६२६४८

e-mail : kathabimb@gmail.com
www.kathabimb.com

● **न्यूयॉर्क संपर्क** ●
नरेश मित्तल
(M) 845-304-2414
नमित सक्सेना
(M) 347-514-4222
● **शिकागो संपर्क** ●
तूलिका सक्सेना
(M) 224-875-0738

एक प्रति का मूल्य : २० रु.
कृपया नमूने की प्रति मंगाने हेतु
२० रु. के डाक टिकट अवश्य भेजें.
(सामान्य अंक : ४०-४४ पृष्ठ)

कहानियां

।। ७ ।। एक ऋतु ऐसी भी - नीरजा हेमेंद्र
।।१७।। मां के चले जाने के बाद - डॉ. रमाकांत शर्मा
।।२१।। पानी की प्यास - डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी
।।२७।। कोख़ - अरुणा जेठवाणी
।।३१।। सृजन यात्रा - माधव नागदा

लघुकथाएं

।।२०।। इति श्रवण-कथा, आम आदमी / योगेंद्र शर्मा
।।२६।। वाह, क्या कहने ! / माला वर्मा
।।३०।। निष्कलंक / ज्ञानदेव "मुकेश"
।।५४।। परंपरा / आनंद बिल्थरे

गीत / ग़ज़लें

।।११।। आत्मकथ्य (गीत) / आनंद तिवारी पौराणिक
।।३४।। दो ग़ज़लें / स्व. आर. पी. शर्मा "महरिष"
।।३९।। ग़ज़ल / सतपाल "स्नेही"
।।४०।। गीत / अखिलेश "अंजुम"
।।५१।। ग़ज़ल / शरीफ़ कुरेशी

स्तंभ

।। २ ।। "कुछ कही, कुछ अनकही"
।। ४ ।। लेटर बॉक्स
।।३५।। "आमने-सामने" / माधव नागदा
।।४१।। "औरतनामा" / डॉ. राजम पिल्लै
।।४५।। "वातायन" / डॉ. दिनेश श्रीवास्तव
।।४७।। "श्रद्धा-सुमन" (स्व. डॉ. सतीश दुबे) / रमेश मनोहरा
।।४९।। "संस्मरण" / डॉ. रूपसिंह चंदेल
।।५३।। पुस्तक-समीक्षा

● **"कथाबिंब" अब फेसबुक पर भी** ●
facebook.com/kathabimb
आवरण पर नामित रचनाकारों से निवेदन है कि
वे कृपया अपने नाम को "टैग" करें.

आवरण चित्र : सांची-स्तूप, बौद्ध विहार (म.प्र.), दिसंबर-९६
चित्र : डॉ. अरविंद

"कथाबिंब" मुंबई की "संस्कृति संरक्षण संस्था" के सौजन्य से प्रकाशित होती है.

कुछ कही, कुछ अनकही

इस अंक के साथ "कथाबिंब" ने प्रकाशन के ३९वें वर्ष में प्रवेश किया है. कथा-प्रधान पत्रिका होने के नाते स्वभाविक है कि हमारा ज़ोर कहानियों पर अधिक रहे. बहुत-सी प्रकाशन सामग्री हमें रचनाकार ई-मेल से भेजते हैं. यह कई बार पहले भी रेखांकित किया जा चुका है कि लघुकथाएं, कविताएं, ग़ज़लें या इस तरह की छुटपुट रचनाएं कृपया मेल से न भेजें. इनका उत्तर देना या इन पर कोई निर्णय लेना क़तई संभव नहीं है. कुछ लेखक "कथाबिंब" के साथ वही रचना अनेक पत्रिकाओं को मेल करते हैं. इन पर भी ध्यान देना संभव नहीं है. यदि आप लघुकथाएं, कविताएं, ग़ज़लें आदि प्रकाशन हेतु भेजना चाहते हैं तो स्वागत है. कृपया साधारण डाक से रचनाएं भेजें और चयन की सुविधा के लिए एक लिफ़ाफ़े में कम से कम ३-४ रचनाएं प्रेषित करें. साथ में जबाव के लिए एक पोस्टकार्ड तो अवश्य ही रखें. होली, दीवाली या नये साल के अवसर पर छपने के लिए त्रैमासिक "कथाबिंब" में कोई गुंज़ाइश नहीं है. वर्तमान में ई-मेल से कहानियां भेजना आसान हो गया है. कहानियां भेजते समय डॉक फ़ाइल के साथ पीडीएफ़ फ़ाइल भी भेजें. कहानी यूनीकोड में रहे तो श्रेष्ठ होगा. पाठकों और सदस्यों से एक निवेदन – बहुत सारे लोगों को पत्रिका अनेक सालों से भेजी जा रही है. हर अंक की कुछ प्रतियां इस कारण लौट आती हैं कि व्यक्ति ने मकान बदल लिया है. कृपया पता बदलने की सूचना हमें दें. यदि किसी कारणवश आप चाहते हैं कि पत्रिका आपको न भेजी जाय तो भी हमें सूचित करें.

हाल ही में भोपाल जाने का अवसर प्राप्त हुआ. अंक के मुखपृष्ठ पर भोपाल के पास सांची स्थित बौद्ध स्तूप का चित्र प्रस्तुत है.

इस बार *"कमलेश्वर-स्मृति कथाबिंब कथा पुरस्कार-२०१६"* के पुरस्कारों की घोषणा पृष्ठ ५६ पर प्रकाशित की गयी है. सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई. प्रशस्ति-पत्र के साथ पुरस्कार की राशि चैक द्वारा शीघ्र भेजी जायेगी.

हमारा प्रयास रहता है कि तिमाही ख़तम होते-होते नया अंक वेबसाइट पर चला जाये. पाठक वेबसाइट देखकर सुनिश्चित कर सकते हैं कि अमुक अंक प्रकाशित हुआ है अथवा नहीं. वेबसाइट के अलावा *"कथाबिंब"* को फ़ेसबुक पर भी देखा जा सकता है.

●

आइए, अब इस अंक की कहानियों का ट्रेलर देखें .... *"एक ऋतु ऐसी भी !"* नीरजा हेमेंद्र की "कथाबिंब" में यह दूसरी कहानी है. जीवन में मौसम की तरह ही परिवर्तन आते रहते हैं. कभी पतझड़ और कभी वसंत. नायिका एक शिक्षिका है, उसके जीवन में वसंत आया था पर सब कुछ आभासी था. पति को छोड़कर वह निपट अकेली रह गयी. वह चाहती है कि शिष्या ईशिता के साथ उसके जैसा न हो. अगली कहानी *"मां के चले जाने के बाद"* (डॉ. रमाकांत शर्मा) एक अलग धरातल की कहानी है. वृद्धावस्था में बहुधा बच्चे मां-बाप को अकेला छोड़ देते हैं, कभी-कभी तो उनकी कोई खोज-ख़बर भी नहीं लेते. लेकिन यहां मां के न रहने पर पुत्र पिता को साथ रखता है और उनका पूरा ख़्याल रखता है. किंतु कभी मां का ज़िक्र यह समझकर नहीं करता कि पिता दुखी होंगे. किंतु पिता को लगता है कि शायद वह मां को भूल गया है. डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी की कहानी *"पानी की प्यास"* मुंबई से ६०-७० मील दूर के एक ऐसे बंजर क्षेत्र की कहानी है जहां हमेशा पानी की किल्लत रहती है. दूर स्थित कुएं से घर की औरतें पानी भर कर लाती हैं. कोई भी पुरुष पानी की प्यास के लिए कई जलपत्नियां ब्याह सकता है. इसे कोई ग़लत नहीं मानता! अरुणा जेठवाणी की मूल सिंधी कहानी का देवी नागरानी ने अनुवाद प्रस्तुत किया है : "कोख़." सोनिया को मां से नफ़रत है, वह उससे मिलना नहीं चाहती. मां ने पिता को छोड़ दिया है और "काका" के साथ रहती है. ऐसा क्यों है. लेकिन अब सोनिया स्वयं गर्भवती है, ऐसे में संबंधों को लेकर उसका सारा नज़रिया बदल जाता है."सृजन यात्रा" (माधव नागदा) अंक की अंतिम कहानी है. लेखक नयी कहानी लिखने का मूड बना रहा है. वह अपने आसपास के लोगों के बारे में लिखना चाहता है. लेकिन कहानी आगे नहीं बढ़ पाती. बीच-बीच में पत्नी कभी चाय, कभी नाश्ता लेकर आती है. कमरा बुहारते-बुहारते कहती है कि मैं आपके आसपास की दुनिया को सुंदर और रहने लायक़ बना रही हूं. लेखक को अहसास होता है कि वह भी तो यही काम करने की कोशिश करता है. उसमें नयी ऊर्जा का संचार होता है, वह तय करता है कि उसे अपनी सृजन-यात्रा ज़ारी रखनी चाहिए.

●

वैसे देखा जाय तो तीन माह का समय अधिक नहीं होता. किंतु पिछली तिमाही में बिना किसी रक्तपात के देश में जो क्रांति हुई है उसे तत्काल समझ पाना मुश्किल है. हाल में हुए चुनावों के परिणाम अत्याधिक चौंकाने वाले हैं. भाजपा के दिग्गजों को भी अनुमान नहीं था कि पार्टी को इतनी बड़ी सफलता मिलेगी. पंजाब को छोड़कर चार प्रांतों में भाजपा क़ाबिज हो गयी है. "आप" की आशाओं पर भी तुषाराघात हुआ है. गोवा में तो "आप" के कितने कैंन्डीडेट्स की

ज़मानतें जब्त हुई हैं. "आप" का खाता ही नहीं खुला वह अलग. सारे ओपिनियन और एक्ज़िट पोल फेल हो गये. उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में ८० प्र. श. सीटों पर भाजपा यशस्वी हुई जबकि दोनों प्रदेशों का जातीय समीकरण पूरी तरह भिन्न है. पांच साल पहले दिल्ली के शाही इमाम ने समाजवादी पार्टी के नाम पर फ़तवा ज़ारी किया था – समाजवादी पार्टी सत्ता में आ गयी. इस वर्ष, २०१७ में, बसपा ने लगभग १०० मुसलमानों को टिकट दिये और जामा मस्जिद से बसपा के नाम फ़तवा दिया गया. बहन मायावती को समझ ही नहीं आ रहा है कि गणित में कहां उलट-फेर हुआ? क्यों मुसलमानों और चहेते दलितों ने उन्हें वोट नहीं दिया. ज़रूर वोटिंग मशीनों में गड़बड़ी की गयी है ! पर कहीं ऐसा तो नहीं है कि नोटबंदी ने आपकी सारी **"प्लानिंग"** पर पानी फेर दिया. चुनावों में वोटिंग मशीनों का उपयोग १२-१५ सालों से हो रहा है. दिल्ली और बिहार में भाजपा हारी तब कहीं कोई गड़बड़ नहीं थी. चुनाव की घोषणा के पूर्व कॉन्ग्रेस का नारा था **"सत्ताइस साल, यूपी बेहाल."** फिर युवराज राहुल गांधी तथा अखिलेश यादव को लगा कि अकेले भाजपा से जीत नहीं सकते तो हड़बड़ी में "सांप्रदायिक शक्तियों" को हराने के लिए आपस में बिहार की तर्ज़ पर गठबंधन किया. लेकिन बिहार की हार से भाजपा ने काफ़ी कुछ सीखा. अपने संगठन को काफ़ी मजबूत किया. आज भाजपा **"कैडर"** पर आधारित विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है, जिसके २० करोड़ से अधिक निष्ठावन कार्यकर्ता हैं. मोदी की स्वच्छ छवि और सर्ज़िकल स्ट्राइक व नोटबंदी जैसे कड़े निर्णय लेने की क्षमता ने जनता का मन जीत लिया. लोगों ने बढ़-चढ़कर मतदान किया. अगड़े-पिछड़े, दलित-अतिदलित और अल्पसंख्यकों ने फ़तवा के विरुद्ध भाजपा को वोट दिया. मुस्लिम महिलाओं ने तीन तलाक का मुद्दा उठाने के लिए भाजपा को समर्थन दिया. पिछले कुछ चुनावों में लोग ध्रुवीकरण की बात करते रहे हैं. इधर पूरे देश में नगर निगम या निकायों में जहां भी चुनाव हुए हैं भाजपा ही आगे है. अगर ध्रुवीकरण हुआ है तो वह मोदी के पक्ष में हुआ है – एक आदमी जो **"सबका विकास, सबका साथ"** की बात करता है, रोज़ १६-१८ घंटे काम करता है, साल में एक दिन भी आराम नहीं करता. मैं सहर्ष यह ख़तरा उठाने लिए तैयार हूं कि मुझे लोग "मोदी भक्त" कहने लगें.

देश के कुछ तथाकथित वामपंथी व प्रगतिवादी बुद्धिजीवी और "सेकुलरिस्ट" अभी भी शुर्तुमुर्ग की तरह रेत में अपने सिर छुपाकर आंधी के गुज़र जाने की प्रतीक्षा में हैं. पिछले तीन सालों में जनता ने इन विघटनकारी शक्तियों को पहचाना है जिनके नुमाइंदे जब-तब देश के टुकड़े करने, कश्मीर और बस्तर की आज़ादी की बात करते हैं.

२०१४ की हार के बाद से अब तक कई बार राहुल गांधी कॉन्ग्रेस में बड़े परिवर्तन की बात कहते रहे हैं. क्या युवराज के अध्यक्ष बन जाने मात्र से कॉन्ग्रेस में जान आ जायेगी? "एक्सपाइरी" की तारीख़ समाप्त हो जाने के बाद आई सी यू में गांधी परिवार की ऑक्सीज़न देकर कितने दिन तक कॉन्ग्रेस को जीवित रखा जा सकता है? सबसे पहले युवराज को एक लंबी छुट्टी पर बाहर भेज देना चाहिए. कॉन्ग्रेस में समर्थ और अन्य युवा नेताओं की कमी नहीं है. कॉन्ग्रेस सेवादल को पुनर्गठित करके, गांव-गांव, शहर-शहर समाज सेवा के ठोस काम हाथ में लेना चाहिए, संगठन तैयार करना चाहिए. इसमें समय लग सकता है. बहुत से विपक्षी नेताओं ने उ. प्र. के परिणामों के बाद यह स्वीकार कर लिया है कि २०१९ में मोदी को दोबारा चुनकर आने से कोई नहीं रोक सकता. तब तक अगर कोई अप्रत्याशित न घट जाय! फरवरी के तीसरे सप्ताह में आदित्य सिन्हा नाम के एक टिप्पणीकार ने मुंबई के एक अख़बार में लिखा था कि ४७ साल के युवराज को अब शादी कर लेनी चाहिए और परिवार बढ़ाना चहिए. यदि वे अभी शादी नहीं करेंगे तो कब करेंगे? पत्नी ठोक-पीटकर, कान उमेठकर शायद उन्हें एक नये सांचे में ढाल सके, जो लाख कोशिशों के बाद संभवतया सोनिया जी न कर सकीं. यदाकदा यह भी कहा जाता है कि परिवार के किसी भी सदस्य पर व्यक्तिगत आक्षेप या टिप्पणी नहीं की जानी चाहिए. किंतु सिन्हा जी के अनुसार आज यह समय की मांग है. देश सेवा की दिशा में एक क़दम.

अतुलनीय बहुमत प्राप्त होने मात्र से बात ख़तम नहीं हो जाती. अनेक समस्याएं, चुनौतियां मुंह बाये खड़ी हैं. सबसे बड़ी समस्या आतंकवाद से निपटने की है. हाल में हुई कई रेल दुर्घटनाओं के पीछे आतंकवादियों का हाथ बताया जा रहा है. इसमें देश में पल्लवित कुछ संगठनों की भूमिका सामने आयी है. रोज़ ही रेलों से, बसों से, हवाई ज़हाज़ से व आवागमन के अन्य साधनों से असंख्य लोग यात्रा करते हैं. पूजा स्थलों में भीड़ होती है. रैलियां होती हैं, जुलूस निकलते हैं. सुरक्षा एजेन्सियां और कर्मी चौबीसों घंटे चौकसी नहीं रख सकते. वर्तमान में सीरिया की लड़ाई कुछ धीमी पड़ी है. कहीं ऐसा तो नहीं है कि "आईएस" वाले भारत में नया मोर्चा खोलने की कोशिश कर रहे हैं. कश्मीर में भी लुकाछिपी थमने का नाम नहीं ले रही. हम और आप यदि अपने आसपास कोई संदिग्ध गतिविधि देखें तो कम से कम रिपोर्ट करने में कोताही न करें.

●

सभी देशवासियों के लिए एक अच्छी ख़बर है कि ज़ीएसटी बिल पारित हो गया है और १ जुलाई २०१७ से रोज़मर्रा की सामग्री पर पूरे देश में एक-समान टैक्स लगेगा. संभावना है काफ़ी चीज़ें सस्ती हो जायेंगी. यह **"अच्छे दिन"** आने का प्रारंभ है.

अरविंद

लेटर-बॉक्स

▸▸ 'कथाबिंब' का १३६वां अंक प्राप्त हुआ. पत्रिका का सौंदर्य और गंभीरता बरकरार है, देखकर ख़ुशी हुई. इतने जतन से कौन साहित्य की सेवा करता है, आज...?

इस अंक में 'कसाईखाना (कल्पना रमानी) और क़बरखुद्दा (डॉ. मोहसिन खान) कहानियां विशेष रूप से मुझे अच्छी लगीं. दोनों कहानियां मौजूदा हालात को दर्शाती हैं. मोहसिन खान की कहानी 'क़बरखुद्दा' जिसे हमारे यहां 'ग़ोरखन्दक' कहा जाता है. बेहतर यही शीर्षक होता. ख़ैर यह रचनाकार की मर्जी की बात है.

कमल कपूर की कहानी 'वृंदा ने कहा था' ने एक साथ कई समस्याओं को समेट कर आज के समय के सामने रख दी है. उन्हें बधाई. 'कथाबिंब' पत्रिका की एक विशेषता मुझे अच्छी यह लगती है कि संपादकीय में अरविंद जी पूरे अंक की संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत कर देते हैं. और साथ ही साथ समसामयिक राजनीतिक संदर्भ पर भी टिप्पणी करने से नहीं चूकते हैं, जिससे प्राय: तथाकथित प्रगतिशील पत्र-पत्रिकाएं बचकर निकल जाती हैं.

– डॉ. सेराज खान 'बातिश'

३-बी, बंगाली शाह वारसी लेन, दूसरा तल्ला, फ़्लैट नं.४, खिदिरपुर, कोलकाता-७०००२३. मो.: ९३३९८४७१९८

▸▸ 'कथाबिंब' का अक्तूबर-दिसंबर २०१६ अंक मिला. हमेशा की तरह दो बार पहले संपादकीय पढ़ा. प्रत्येक समझदार भारतीय के हृदय की बात आपने कही है. एक-एक बात सच और कांटे पर तुली हुई है. विपक्ष की सही आलोचना आपने की है. उसे कोई बात पसंद नहीं आती. सच्चा विपक्ष सरकार के सही क़दमों की प्रशंसा भी करता है, यहां तो बस — विरोध के लिए विरोध हो रहा है. मुझे वह ५०-६० के दशक का विपक्ष याद आता है, जो सरकार के अच्छे प्रयासों की तारीफ़ भी करता था. अब वैसे लोग कहां! राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का खेल रह गयी है.

कहानियां — क्षमा करेंगे, कोई ख़ास पसंद नहीं आयी. कोई भी तो याद रह जाने योग्य नहीं. 'क़बरखुद्दा' अच्छी कहानी बन सकती थी, किंतु कथा शैली का अभाव है. लगातार केवल सपाट लेखकीय वक्तव्य. पात्रों के कथोपकथन से कहानी आगे बढ़नी चाहिए. 'कसाईखाना' (कल्पना रोमानी) अपेक्षाकृत अच्छी कथा है. कथावस्तु पुरानी है, किंतु अच्छी तरह लिखित भी है.

डॉ. राजम पिल्लै का आलेख 'आंडाल : सर्वहृदय शासिका' बड़ा ही ज्ञानवर्धक रहा. मुझे दक्षिण भारत की 'आलवार' परंपरा के बारे में कौतूहल था. गीता प्रेस का 'भक्तचरितांक' मेरे पास है, तथापि उससे अधिक अच्छी तरह इस लेख में उनके बारे में समझाया गया है. लेखिका, बधाई की पात्र हैं. 'कोदै' का बढ़िया चित्रण-विवरण दिया गया है.

मनहर चौहान का इंटरव्यू बहुत उत्तम रहा. पिछले साठ-सत्तर दशकों के हिंदी साहित्य जगत का बड़ा सही सटीक विवरण, विश्लेषण है. उनका प्रशंसक रहा हूं, पत्राचार भी हुआ था. उन्होंने यह ठीक कहा कि, 'पाठकों की नस पकड़ने की कला सीखनी होगी. लेखन में रोचकता बनाये रखनी होगी. गरिष्ठ, दार्शनिकता की बातें कोई नहीं पढ़ेगा.' यह सही बात है. तथापि ध्यान रखना होगा कि रोचकता के चक्कर में सड़क-छाप लेखन न हो जाये. यही तो सफल उत्तम लेखन की पहचान है. रोचकता के साथ ही समाज को सही दिशा दे सकने वाला लेखन होना चाहिए. पुनश्च: ऐसे ही वरिष्ठ लेखकों का इंटरव्यू दिया कीजिए.

– चंद्रमोहन प्रधान

आमगोला, मुज़फ़्फ़रपुर-८४२००२.

▸▸ 'कथाबिंब' (अक्तूबर-दिसंबर २०१६) प्राप्त हुआ. धन्यवाद.

इस अंक में प्रकाशित कहानियां 'वृंदा ने कहा